>**Title:** Regarding death of two villagers caused in Navgarh Block, Chandauli in Uttar Pradesh.

कुंवर अखिलेश सिंह (महाराजगंज, उ.प्र.) : आदरणीय अध्यक्ष जी, देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के चंदौली जनपद के नवगढ़ ब्लॉक में धनकुमारी कलां गांव में भूख से दो गरीब लोगों की मृत्यु निश्चित तौर पर दर्दनाक है। उत्तर प्रदेश के चंदौली जनपद की ग्राम-पंचायत धनकुमारी कलां के गांव कुबरा की 50 साल की दगिया तथा 60 वर्ा के बूढ़े विश्वनाथ हरिजन की मौत हुई है। उस ग्राम-पंचायत के ग्राम प्रधान द्वारा जिला-कलैक्टर को रजिस्टर्ड पत्र द्वारा सूचना दी गयी। उस क्षेत्र के माननीय सांसद जवाहर लाल जायसवाल द्वारा जिला-अधिकारी और जिला प्रशासन को सूचना दी गयी लेकिन बड़े खेद के साथ कहना पड़ता है कि उस जनपद के जिला-अधिकारी, जिला प्रशासन तथा प्रदेश प्रशासन द्वारा इस मौत को दबाने के लिए इस घटना से इंकार किया जा रहा है। केवल उत्तर प्रदेश प्रशासन ही इस मौत के साथ यह क्रूर मजाक नहीं कर रहा है बल्कि इस देश के कृाि मंत्री आदरणीय अजीत सिंह जी द्वारा जब आपने नियम 193 के अंतर्गत सूखे पर चर्चा करायी थी इस सदन के माध्यम से संपूर्ण देश को आश्वासन दिया था कि हमारे गोदाम अनाजों से भरे हुए हैं और हम सूखे से किसी भी व्यक्ति को मरने नहीं देंगे। लेकिन मान्यवर, माननीय अजीत सिंह जी का वह वक्तव्य इस सदन को ही नहीं संपूर्ण देश को गुमराह कर रहा है। आज जब देश के गोदाम अनाजों से भरे हुए हैं, ऐसे में देश के सबसे बड़े राज्य में इस तरह की दर्दनाक मौत निश्चित रूप से हमारी व्यवस्था पर एक प्रश्नवाचक चिन्ह है। इसलिए मैं सदन के माध्यम से यह मांग करता हूं कि जिन लोगों ने सदन को गुमराह करने का काम किया है, उनके खिलाफ कार्रवाई की जाये।

जो व्यक्ति मौत से मरे हैं, उसकी उच्च स्तरीय जांच कराई जाए। हम यह भी मांग करेंगे कि सदन की एक संयुक्त समिति मौके पर जाकर इसकी जांच करे।

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल) : अध्यक्ष महोदय, यह एक गम्भीर मामला है। माननीय जायसवाल जी का संसदीय क्षेत्र चंदौली है। वहां के नवगढ़ गांव का ब्लॉक धनकुमारीकलां है और उसका मजरा मल्ला है जिसे कुंवरडीह कहते हैं। वहां 50 साल के दगिया और 60 साल के विश्वनाथ की भूख से मौत हो गई है। हमने स्पट नाम, स्पट गांव, जिला और ब्लॉक का नाम यहां बता दिया है। वहां दो लोगों की भूख के कारण मौत हो गई। इस बारे में प्रधान ने सूचना भी दी लेकिन जिला प्र ाशासन ने बार-बार मना कर दिया। दूसरी तरफ कृाि मंत्री ने बार-बार सदन में कहा और अखबार भी उनके इस बयान से भरे पड़े हैं कि गोदाम देशी-विदेशी अन्न से भरे पड़े हैं लेकिन इसके बाद भी मौतें हो रही हैं। यह गम्भीर मामला इसलिए है कि पूरे विपक्ष ने आपको इससे सावधान किया था। सत्ता पक्ष के माननीय सदस्यों ने और मध्य प्रदेश के कई माननीय सदस्यों ने भी आपको इससे सावधान किया था कि अब मजदूर और खेतिहर मजदूर भूखों मरेंगे लेकिन इसके बावजूद सरकार ने कोई गम्भीर कदम नहीं उठाए। अब यह सवाल है कि अगर इस तरह की मौतें हो रही हैं तो क्या हम लोग उन्हें बर्दाश्त करेंगे या हमें जनता से यह कहना पड़ेगा कि जितने गोदाम अन्न से भरे पड़े हैं, भूखों मरने की बजाय अब पुलिस, प्रशासन और सरकार की गोली से मरना स्वीकार करें और उन गोदामों का ताला तोड़ कर अन्न बांट लें क्योंकि इसके अलावा कोई रास्ता बचता नहीं है। यह गम्भीर स्थिति आने वाली है। इससे निपटने के लिए सरकार ने अभी तक क्या कदम उठाए हैं और उसके खिलाफ मुकाबला करने के लिए क्या कदम उठाए हैं? यह सच्चाई है कि माननीय जायसवाल जी ने डीएम से मिल कर सूखे की स्थिति से उन्हें अवगत कराया। जहां यह इलाका है, वहां गम्भीर स्थिति है। वहां पानी का अभाव है। पूरा का पूरा इलाका माफिया लोगों का गढ़ है। इस मामले को गम्भीरता से लेकर समस्या को हल करें क्योंकि जिलाधिकारी और दूसरे अधिकारी किसानों की बात नहीं सुन रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, आप ही हैं, इसलिए आप निर्देश दीजिए। यदि नहीं देंगे तो मैं कहना चाहता हूं कि अगर लोग भूखों मरेंगे तो सबसे पहले हम लोग होंगे, जो गोदाम तोड़ने के लिए जनता को आह्वान करेंगे।

श्री रामजीलाल सुमन : अध्यक्ष महोदय, अभी मुलायम सिंह जी और अखिलेश जी ने जो सवाल उठाया कि चंदौली में सूखे के कारण दो मौतें हुईं, वह हमारे साथी जायसवाल जी का संसदीय क्षेत्र है। यह जो सिलसिला शुरु हुआ है, वह बहुत गम्भीर मामला है। इस समय पूर्वी उत्तर प्रदेश में धान की रोपाई होती थी। जिन लोगों को काम नहीं मिलता था, मजदूरी नहीं मिलती थी, वह धान की रोपाई से जीवन यापन करते थे। इस साल पानी की कमी से धान की रोपाई नहीं हुई और लोगों को नियमित रोजगार नहीं मिला। उसी का परिणाम है कि दगिया और विश्वनाथ की मौत हो गई। यह बहुत गम्भीर मामला है। आज चारों तरफ त्राहि-त्राहि मची है। देश के सामने गम्भीर संकट उपस्थित हो गया है। जो हालात हो रहे हैं उससे जमाखोरी बढ़ेगी। जैसा मुलायम सिंह जी ने अभी कहा कि सरकार ने कहा कि गोदाम अन्न से भरे पड़े हैं। यह अजीब स्थिति है। सरकार एक तरफ कहती है कि हमारे पास पर्याप्त अन्न है और दूसरी तरफ भूख से लोग दम तोड़ रहे हैं। इससे ज्यादा दुखद बात और कोई हो नहीं सकती है। आज हालत यह हो गई है कि जिन लोगों के पास अपने पशु हैं, जानवर हैं, उनको खिलाने के लिए चारे का इंतजाम नहीं है। वह उन्हें कुट्टी खाने के लिए , ले जाने के लिए बेबस हैं। इस सवाल पर सरकार का कोई सकारात्मक रवैया नहीं है। उपप्रधान मंत्री और गृह मंत्री की अध्यक्षता में एक टास्क फोर्स बनी है जिसमें वित्त मंत्री श्री जसवन्त सिंह, कृाि मंत्री श्री अजित सिंह, खाद्य मंत्री श्री शरद यादव और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शान्ता कुमार सदस्य हैं। सूखे से निपटने के लिए क्या रेल मंत्री, जल संसाधन मंत्री की सेवाओं की आवश्यकता नहीं है। इन दोनों मंत्रियों को इसमें क्यों नहीं रखा है? मैं मजबूती से कहना चाहता हूं कि सरकार घोाित करे कि उसने अब तक सूखे से निपटने के लिए क्या किया है?

इस सरकार का रोल क्या रहता है। आज श्री अजित सिंह जी का बयान छपा है। हालत यह है कि ऐसी स्थिति में छोटे किसानों के ब्याज माफ हो सकते हैं। आज हमें जो बताया जाता हैâ€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इस विाय पर 55 लोगों के भााण हो चुके हैं। अब आप बैठ
जाइये।

श्री रामजीलाल सुमन : अध्यक्ष महोदय, सरकार क्या सकारात्मक कदम उठा रही है, इसकी घोाणा सरकार करे। टास्क फोर्स गठित हो रही है, सरकार कहती है कि हम यह कर रहे हैं, वह कर रहे हैं। मैं सरकार से जानना चाहता हे कि आखिर वह क्या कर रही है?

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल (कानपुर) : अध्यक्ष महोदय, पूर्वी उत्तर प्रदेश के कई इलाकों मेंâ€¦ (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इस विाय पर जिन लोगों ने नोटिस दिया है, मैं उन्हें इजाजत दूंगा। चन्द्रशेखर जी, क्या आप बोलना चाहते हैं?

श्री चन्द्रशेखर (बलिया, उ.प्र.) : जी हां।

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, श्री जायसवाल के बाद बोलियेगा।

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल : अध्यक्ष जी, आज के अखबारों में चन्दौली जिले में दो व्यक्तियों की मौत भूख से होने का समाचार छपा है। लेकिन हकीकत यह है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश की हालत बहुत खराब है। 15 जून से लेकर 15 जुलाई तक हर हालत में पूर्वी उत्तर प्रदेश में बरसात शुरु हो जाती है। एक महीना बीत जाने के बाद जब बरसात नहीं हुई तब केन्द्र और प्रदेश सरकार ने इस बात पर ध्यान देना शुरु क्या कि हम उत्तर प्रदेश में सूखे की स्थिति से कैसे निपट सकते हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश के 15 परसेंट किसान ऐसे हैं जिनके पास न तो अपनी जोत है, न अपनी जमीन है और न जोत या जमीन के द्वारा वे लोग कमाई कर सकते हैं, वे केवल मजदूरी पर आश्रित हैं। चूंकि इस बार बरसात नहीं हुई है, इसलिये जुताई और बुवाई का कोई काम अभी तक शुरु नहीं हो सका है। उन लोगों को मजदूरी प्राप्त नहीं हो रही है। उनकी हालत यह है कि आज तो दो व्यक्तियों की मौत की खबर अखबारो में छपी है, कोई ताज्जुब की बात नहीं कि दर्जनों व्यक्तियों की मौत भूखमरी से हो गई हो। इस बात का ताज्जुब नहीं कि अगले 10-15 दिनों में यही स्थिति रही तो सैंकड़ों की तादाद में इस तरह की घटनायें घट सकती हैं। मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि जब देश के एफ.सी.आई. गोदामों में लाखों टन अनाज सड़ रहा है, हमारे प्रदेश में भुखमरी हो रही है, लोग भूख से मर रहे हैं, तो इससे

बड़ा दुर्भाग्य और विडम्बना और कोई नहीं सकती। यहां माननीय कृषि मंत्री भाषण दें, वहां प्रदेश के मुख्य मंत्री भाषण दें, भाषण से कहीं राशन मिलता है? क्या भूख से ऐसे मौतें होती रहेंगी? ये लोग भाषण देते रहेंगे, व्यवस्था बनाते रहेंगे, नीतियां बनाते रहेंगे। मेरा आपके माध्यम से अनुरोध है कि आप कृषि मंत्री को निर्देश दें और उत्तर प्रदेश प्रशासन से अनुरोध करें

कि जहां कहीं भुखमरी की स्थिति हो रही हैं, वहां अनाज भंडार खोल दिये जायें और कोई भी व्यक्ति

हमारे प्रदेश में भूख से नहीं मरना चाहिये।।

श्री चन्द्रशेखर : अध्यक्ष महोदय, यह इतना गंभीर मामला है कि इस पर चुप रहना संभव नहीं। दो तरह की स्थिति है - एक तो अन्न के भंडार भरे पड़े हैं लेकिन दूसरी तरफ लोग भूख से मर रहे हैं। ऐसा लगता है कि उत्तर प्रदेश में कोई सरकार है ही नहीं। जो भी सरकार है, वह क्या कर रही हैं, कम से कम साधारण जनता को इसका पता नहीं है। लेकिन क्या इस स्थिति पर हम विवाद करें, क्या इस स्थिति पर बहस होगी? मेरा आपसे निवेदन है कि आप यहां से सम्माननीय सदस्यों की एक समिति वहां भेजें जो देखे कि स्थिति क्या है? अगर सरकार यह कहती है कि लोग भूख से नहीं मरे लेकिन ग्राम प्रधान कहता है कि भूख से मरे हैं और अगर श्री जायसवाल जी, जो वहां से सांसद हैं, कहते हैं कि मरे हैं, तो फिर इस पर विवाद की क्या बात है? कभी-कभी इस सदन को भी पहल करनी चाहिये। भूख जैसे मामले पर इस सदन को बांटना नहीं चाहिये। मैं आपके माध्यम से संसदीय कार्य मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि इस मामले की जांच होनी चाहिये। अगर यह स्थिति है, अगर मुलायम सिंह जी कहें या नहीं कि लोग मजबूरन हिंसा पर उतारू होंगे लेकिन उस हिंसा का असर भारत सरकार पर होने वाला नहीं है। अभी गृह राज्य मंत्री जी बयान दे रहे थे , जिसे सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। अगर वे समझते हैं कि झारखंड की स्थिति उसी तरह से जैसा बयान दिया है, तो ठीक है, थोड़े दिन और देख लें कि स्थिति क्या होती है। चाहे दवा का प्रश्न हो, चाहे झारखंड का सवाल हो, चाहे भूख का सवाल हो, हर सवाल पर सरकार मौन रहना ही उचित समझती है। जब यह मौन टूटेगा, तब तक जनता के लिये इस मौन को बर्दाश्त करना संभव न होगा।

श्री रामजीलाल सुमन : अध्यक्ष महोदय, श्री जवाहर लाल जायसवाल उस इलाके से सांसद हैं जहां यह घटना हुई है। कृपया इन्हें दो मिनट बोलने का मौका दें।

अध्यक्ष महोदय : इनका नोटिस नहीं है। आपकी पार्टी से आप बोल चुके हैं।

SHRI P.H. PANDIAN (TIRUNELVELI): Sir, before taking his seat in the Parliament a Member has to take an oath...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Shri Pandiyan, a few deaths have taken place in his constituency and as an exception I am allowing him to speak briefly.

श्री जवाहर लाल जायसवाल : अध्यक्ष महोदय, चन्दौली के नौगढ़ ब्लाक में ग्राम सभा धनकुवारी के क्वारडीह गांव में भूख से दो लोगों की मौत हो गई हैं। नौगढ़ ब्लाक जंगल एरिया है और चन्दौली जनपद में सिंचाई बांधों से होती है। वहां नारायणपुर और भूपौली दो पम्प कैनाल हैं। नारायणपुर गांव में 18 पम्प चलते हैं और भूपौली में 11 पम्प लगे हुए हैं। जब मैं 13 तारीख को वहां के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट से मिला था तो नारायणपुर में केवल तीन पम्प ही चल रहे थे। वहां धान की नर्सरी के लिए किसान त्राहि-त्राहि कर रहे थे। जब मैं डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट से मिला तो उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि वह सारे पम्प चलाने का प्रयास करेंगे। लेकिन उसके बाद केवल छः पम्प ही चलाये गये और टेल तक पानी नहीं पहुंच पाया। वहां धान की नर्सरी नहीं लग पाई है। लोगों को मजदूरी नहीं मिल रही है। अगर वहां के पम्पों के लिए दस करोड़ रुपये मुहैया करा दिये जाएं तो सारे पम्प चल सकते हैं। लगभग एक साल पहले जनपद के कलक्टर ने सरकार से दस करोड़ रुपये की मांग की थी और कहा था कि अगर दस करोड़ रुपये मुहैया करा दिये जाएं तो सारे पम्प चलने शुरू हो जायेंगे। सरकार द्वारा केवल दस करोड़ रुपये न देने के कारण वहां की सारी खेती बर्बाद हो रही है। आज वहां भूख से दो मौतें हुई हैं, लेकिन अगर धान की फसल नहीं हुई तो वहां हजारों मौतें होंगी। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि वहां तुरंत पानी की व्यवस्था करायें, ताकि लोगों को भूखों मरने से बचाया जा सके। धन्यवाद।